चन्दामामा

माँ-बच्चों का मासिक पत्र



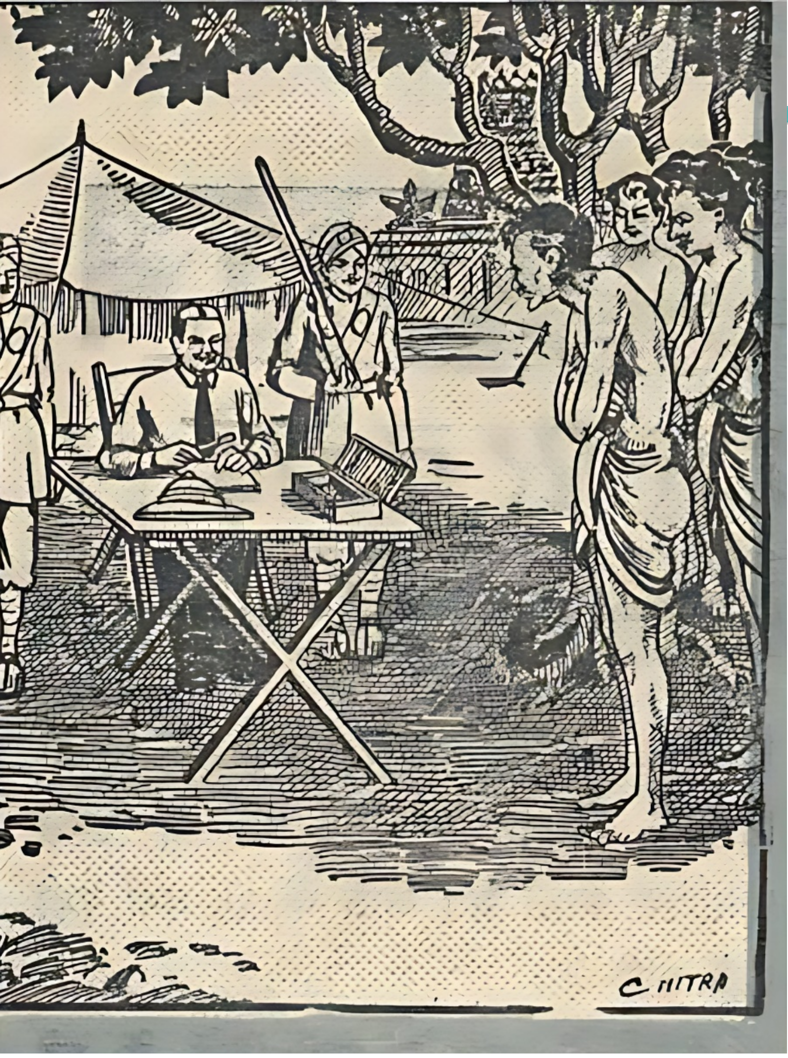


तेलगू भाषा में एक कहावत है जिसका माने होता है- "कहीं घोड़ा मन्दिर पर न चढ़े!" जब कोई हठी आदमी कोई काम करना चाहता है और बड़ों के समझाने पर भी नहीं मानता तो लोग यह कहावत कहते हैं। इस कहावत के बारे में एक कहानी है; लो सुनो-

जब फिरङ्गी लोग पहले-पहले हमारे देश आए तो देहात के लोग उन्हें अपने गाँव में कदम नहीं रखने देते थे। उनका विश्वास था कि इनका आना अशुभ है। खास कर ब्राह्मण लोग जो छूत का बहुत ख्याल करते थे, उनका आना बिलकुल पसन्द नहीं करते थे। वे सोचते थे कि ये समुन्दर पार से आए हुए लोग हैं और इनके आने से उनका गाँव अपवित्र हो जाएगा। क्योंकि शास्त्रों में लिखा हुआ है कि समुद्र यात्रा करना पाप है। इसीलिए कट्टर सनातनी लोग विलायत हो आने वाले लोगों को या तो बिरादरी से निकाल देते थे या उनसे प्रायश्चित्त कराते थे। आज भी यह प्रथा कहीं कहीं जारी है।

कम्पनी के राज के उन दिनों में बड़े साहब और छोटे साहब सभी रहते तो शहर में थे। लेकिन सरकारी काम पर कभी कभी उन्हें गाँवों में मुकाम करना पड़ता था। इस तरह मुकाम पर आए हुए साहबों से गाँवों के लोग बहुत डरते थे। मन में उन्हें उनका गाँव में आना पसन्द न था। लेकिन वे उन्हें खुले तौर पर रोक भी न सकते थे। क्योंकि नाखुश होने पर उन्हें साहब लोग किसी न किसी जाली मुकदमे में फँसा कर चौपट कर सकते थे। सरकारी अफसरों से झगड़ा मोल लेना क्या था, पानी में रह कर मगर से बैर करना था। गोदावरी जिले में पेरूर नाम का एक गाँव

शान्ता देवी

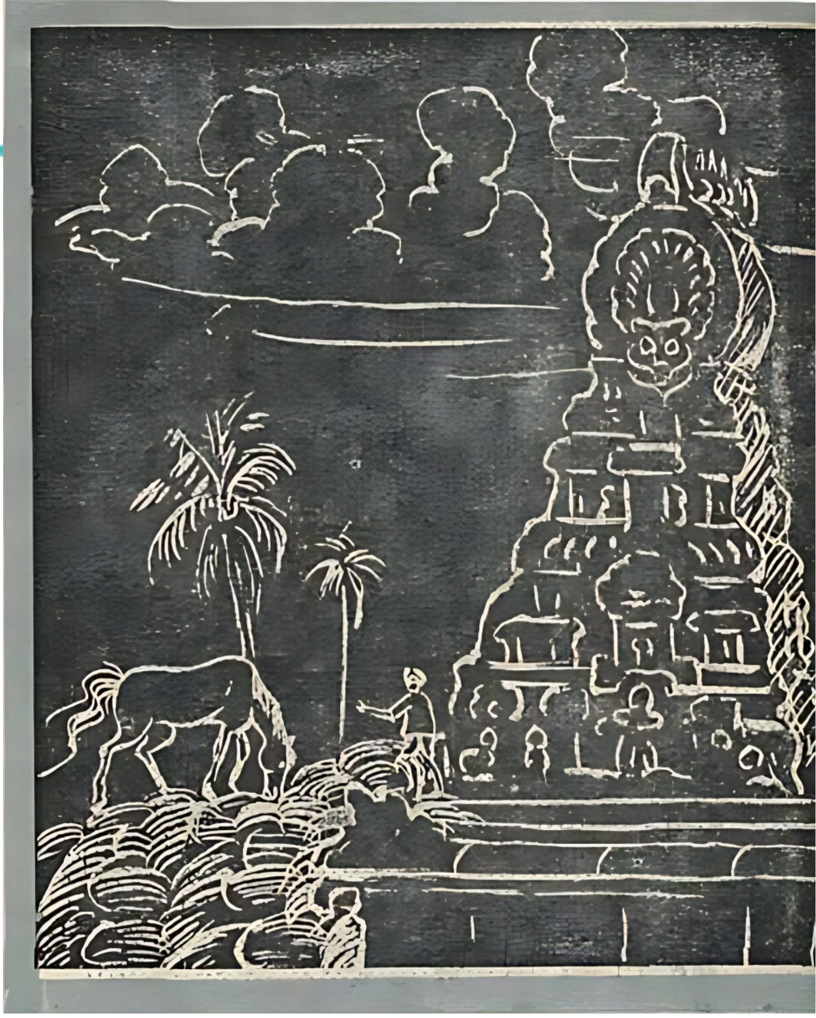


था। यहाँ के रहने वाले ब्राह्मण लोग सरकारी अफसरों से बिलकुल नहीं डरते थे। अब तुम पूछोगे कि जब सब लोग साहबों से डरते थे तो ये क्यों नहीं डरते थे। इसका एक कारण था। उस गाँव के रहने वाले बहुत मिल-जुल कर रहते थे। अगर गाँव में कोई झगड़ा बखेड़ा उठ खड़ा होता तो ये आपस में ही तय कर लेते। कभी अदालत या पुलिस वालों के पास फटकते भी न थे।

एक बार उस गाँव में कोई वारदात हो गई। यह बात जब बड़े साहब को मालूम हो गई तो उन्होंने सोचा- "अच्छा मौका है!" जाँच-पड़ताल करने के लिए वे तुरन्त एक घोड़े पर सवार होकर चपरासियों के साथ उस गाँव की ओर चले। जब गाँववालों को मालूम हुआ कि साहब उनके गाँव आ रहे हैं, तो उन्होंने एक जगह जमा होकर सलाह-मशवरा किया। फिर कुछ बड़े-बूढ़ों ने गाँव के बाहर ही साहब के पास जाकर हाथ जोड़ कर विनय की - "हुज़ूर ! हमारे गाँव का रिवाज है कि हम परदेसियों को अपने गाँव के अन्दर मुकाम नहीं करने देते। आशा है कि आप भी हमारे गाँव के रीति-रिवाजों का ख्याल करेंगे।"

लेकिन साहब ने उन की विनय पर कोई ध्यान न दिया। वे सिर्फ मुसकुरा कर रह गए । शायद उन्होंने सोचा कि इन अनपढ़ गँवारों का मैं क्यों लिहाज करूँ? वे बड़े साहब थे न ! उन्हें गाँव वालों की बात मानने की क्या जरूरत थी ? गाँव वाले नाखुश हो जाते तो भी उनका क्या बिगाड़ सकते थे ? थोड़ी ही देर में उन्होंने गाँव में कदम रखा और मन्दिर की बगल में ही डेरा डाल कर जाँच-पड़ताल करना शुरू कर दिया।

इस तरह दो दिन बीत गए। साहब को किसी चीज़ की कमी न थी।



चपरासी लोग खाने-पीने की चीजें मुफ्त में जुटाया करते। साहब मौज़ से खाते-पीते । उन्हें कोई जल्दी न थी। समय अच्छी तरह कट रहा था। साहब का घोड़ा मन्दिर के पिछवाड़े में बँधा रहता था। तीसरे दिन गाँव वालों ने सोचा कि साहब को एक सबक सिखाना चाहिए। उन्होंने आपस में सलाह करके एक अच्छा उपाय सोच निकाला। वे, आधी रात को जब सब लोग सो रहे थे, उठे और कमर कस कर अपनी अपनी पीठ पर एक एक पुआल का गठ्ठर ढो लाए। उन्होंने उन गठ्ठरों को एक एक करके सीढ़ियों की तरह इस तरह डाल दिया जिससे वे मन्दिर के शिखर जितने ऊँचे हो जाएँ। फिर उन्होंने उन गठ्ठरों पर आखिर तक हरी हरी घास बिछा दी। फिर उन्होंने घोड़े को लाकर उस जगह खोल दिया। घोड़ा हरी घास चरते हुए धीरे-धीरे गडरों पर चढ़ता मन्दिर पर चढ़ गया। तब लोग अपना अपना गठ्ठर उठा कर चुपके से घर चले गए। इस तरह घोड़ा मन्दिर पर कैद हो गया। सवेरा होते ही सारे गाँव में शोर मच गया कि साहब का घोड़ा गायब हो गया है। साहब ने भी चपरासियों को उनकी लापरवाही के लिए खूब फटकारा। चपरासी घबरा कर तुरन्त सारे गाँव में तलाश कर आए। लेकिन घोड़ा उन्हें कहीं न दिखाई दिया। आखिर जब कुछ न सूझा तो साहब खुद उसे तलाश करने निकले। इस तरह घूमते घूमते वे मन्दिर के सामने गए तो मालिक को देखते ही घोड़ा हिनहिना उठा। घोड़े को मन्दिर के शिखर पर देखते ही साहब के अचरज का ठिकाना न रहा। थोड़ी देर में देखा-देखी गाँव वाले समी वहाँ जमा हो गए। जिन जिन को इसका रहस्य नहीं मालूम था वे सब हैरान हो गए कि घोड़ा मन्दिर पर कैसे चढ़ गया ? चारों ओर लोगों में कानाफूसी होने लगी। इतने

में एक बूढ़े ने उस भीड़ में से राह बना कर आगे आकर कहा -"हुजूर! हमने आपसे पहले ही कह दिया था कि आप गाँव के रीति रिवाजों का ख्याल रखें। लेकिन आपने हमारी बातों पर कोई ध्यान न दिया। देखिए, नतीजा क्या हुआ? तिस पर आपने डेरा डाला मन्दिर की बगल में ! भला ऐसी गुस्ताखी हमारे देवता कैसे माफ़ करते ! उन्हें क्रोध आ गया और उन्होंने आपके घोड़े को मन्दिर पर फेंक दिया। बोलिए, हुजूर! क्या किया जाय ? हाँ, अब भी अगर आप अपनी गलती महसूस करें तो शायद हमारे देवता को दया आ जाए और वे आपके घोड़े को सवेरा होते होते हिफाजत से नीचे उतार दें।"

साहब गुम सुम खड़े थे। उनकी अक्ल हैरान थी। घोड़ा आखिर मन्दिर पर कैसे चढ़ गया ! कहीं उसके पंख तो नहीं उग आए ! बहुत सोचने पर भी उन्हें कोई रास्ता न सूझा। आखिर उन्हें धीरे धीरे उस देवता की महिमा पर विश्वास हो गया। साहब को बूढ़े की बात जञ्च गई। उन्होंने हाथ जोड़ कर देवता को प्रणाम कर लिया। तब उस बूढ़े ने कहा- "अब आप निश्चिन्त हो जाइए। सबेरा होते होते आपका घोड़ा नीचे उतर आएगा।" फिर उस रात को गाँव वालों ने पहले की तरह ही घास के गठ्ठरों की सीढियाँ बना कर घोड़े को नीचे उतार दिया और उसे मन्दिर के पिछवाड़े बाँध कर चुपके से अपने अपने घर की राइ ली।

जब दूसरे दिन साहब उठे तो उन्होंने अपने घोड़े को उसकी जगह बँधा पाया। उन्हें बहुत खुशी हुई और साथ ही साथ देवता की महिमा पर बड़ा अचरज भी हुआ। तब से उस गाँव वालों पर उनकी श्रद्धा बहुत बढ़ गई। कहा जाता है कि उन्होंने उस देवता की पूजा के लिए दस बीघे जमीन भी दिला दी। इस तरह यह कहावत उस गाँव में पैदा हुई और धीरे धीरे सब जगह चल पड़ी।





भगवान विठ्ठल को अपने भक्तों से बहुत प्रेम है। उनके भक्त सिर्फ आदमी ही नहीं होते; पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े, कोई भी उनके भक्त बन सकते हैं। भगवान सब पर कृपा करते हैं।

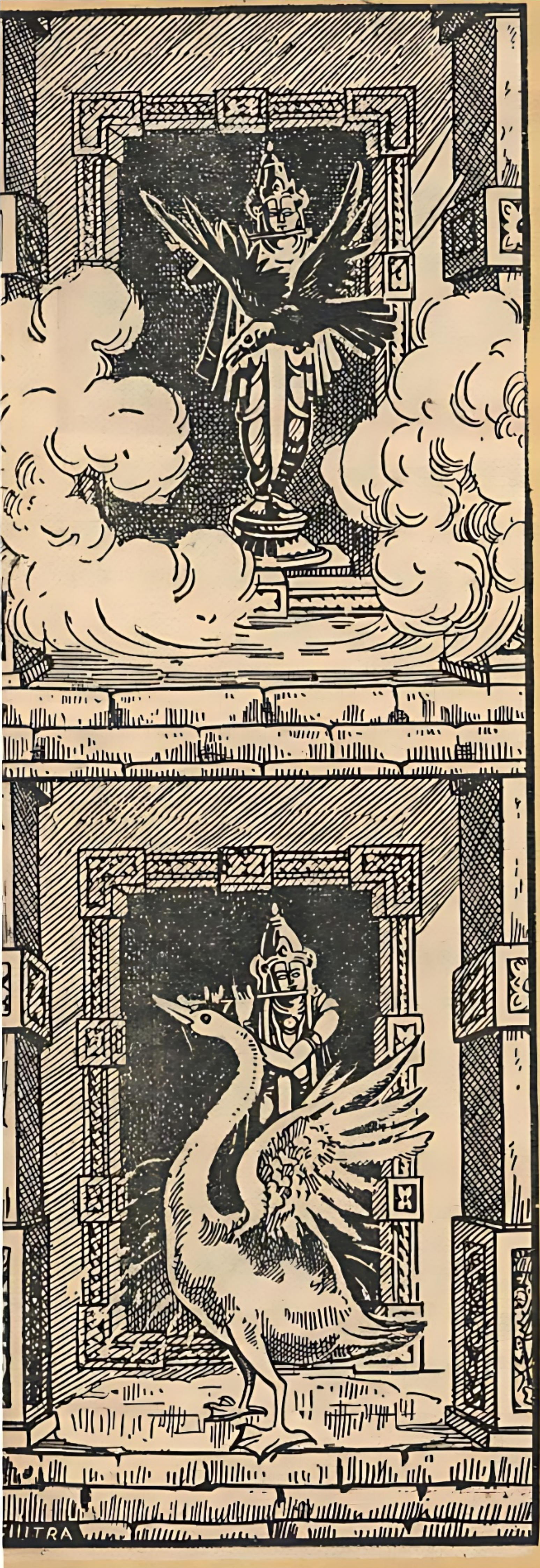
एक बार भगवान को अपना कृष्णावतार याद आ आया। उनके मन में बंशी बजाने की इच्छा हुई और वे बजाने लगे। उनके मुरली गान से सारी प्रकृति मुग्ध हो गई। वहीं नज़दीक में कुछ गौएँ चर रहीं थीं। उनमें से एक मुरली के स्वर से इतनी मुग्ध हुई कि उसके थन से दूध चूने लगा। उसी समय हवा का एक झोंका आया और उस दूध में से एक बूँद छिटक कर भगवान के सिर पर जा पड़ी।

भगवान अपनी कनखियों से यह सब देख रहे थे। उस गाय को यों सुध-बुध खोते देख कर वे बहुत प्रसन्न हुए। दूध की एक बूँद उनके सिर पर क्या पड़ी, उन्होंने समझा कि गाय ने अपने दूध से उनका अभिषेक ही किया। तुरन्त उन्होंने उस गाय को अपना भक्त मान लिया।

भगवान के मन्दिर के सामने ही एक पीपल का पेड़ था। एक कौआ रोज आकर उस पर बैठा करता था। एक दिन भगवान का एक भक्त खीर लेकर भगवान को भोग लगाने आया। उसके चले जाने के बाद भगवान के आगे पड़े हुए अन्न के दाने देख कर वह कौआ बड़े वेग से उनकी ओर झपटा। उसके पंख फड़फड़ाने से भगवान के आगे जमी हुई सारी धूल उड़ गई, जैसे किसी ने झाड़ू लगा दी हो।

भगवान तुरन्त उस कौए पर प्रसन्न हो गए। "तूने मेरे आगे झाड़-बुहार कर साफ़ कर दिया है। तू मेरा बड़ा भक्त है।" उन्होंने कहा।

रामदीन शर्मा



उसी समय एक हंस वहाँ आया। वह शायद किसी सरोवर में जी भर तैर कर आ रहा था। क्योंकि उसके पंख भीगे हुए थे। उसने भगवान के आगे आकर पंख जो फड़फड़ाए तो चारों ओर पानी के नन्हे फुहारे से पड़ गए।

"कौए ने झाड़ू लगा दी। तूने छिड़काव कर दिया। तू भी मेरा भक्त है।"

भगवान ने उस पर प्रसन्न होकर कहा। वे सोचने लगे कि "झाड़ू देना और छिड़काव करना तो हो गया। अब कोई आकर चौक पूर जाए तो अच्छा हो।"

इतने में एक तोता उड़ता उड़ता उड़ता वहाँ आया और एक खम्भे पर बैठ गया। उस तोते की चोञ्च में मोतियों की एक माला लटक रही थी। वह हार एक राजकुमारी का था और तोता उठा लाया था। उसने हार को पञ्जों से पकड़ कर चोञ्च मारना जो शुरू किया तो धागा टूट गया और मोती भगवान के आगे चारों ओर बिखर पड़े।

"वाह! वाह! तोतेराम ! तुमने मेरे मन्दिर में मोतियों का चौक पूर दिया। तुम तो कौए

और हंस से भी बड़े भक्त हो गए।" भगवान ने कहा।

इतने में एक चूहा दौड़ता हुआ वहाँ आ गया। उसके पीछे पीछे एक साँप भी लपका आया। लेकिन भगवान को देखते ही यह साँप चूहे की बात ही भुला कर, टकटकी लगा कर उनकी तरफ देखने लगा। उस साँप को विठ्ठल भगवान से उतना प्रेम था।

"भगवान के आगे झाड़-बुहार हुआ, छिड़काव किया गया, किसी ने चौक भी पूर दिया। मगर दिया तो नहीं जलाया गया ?" साँप ने मन में सोचा।

बच्चो, तुम जानते ही हो कि साँप के माथे पर मणि होती है। अब साँप फन खोल कर भगवान के सामने खड़ा हो गया और उसकी मणि के प्रकाश से सारा मन्दिर जग मग जग मग करने लगा। इस तरह साँप ने भगवान के आगे दिया जलाया।

"धन्य हो सर्पराज ! आज से तुम भी मेरे भक्त गिने जाओगे !" भगवान ने कहा और उसे भी अपना भक्त बना लिया।

थोड़ी देर में भौरों का एक झुण्ड वहाँ आया। उनमें से एक मौरा भगवान





के चरणों में पड़े हुए एक फूल पर जा बैठा और उनके स्पर्श से पवित्र मकरन्द पीने लगा। तुम तो जानते ही हो कि भगवान के चरणामृत के लिए बड़े बड़े भक्त और ज्ञानी लोग भी तरसते रहते हैं ! इस तरह वह दुर्लभ मकरन्द पीकर वह भौंरा पावन हो गया और भगवान का प्रमुख भक्त बन गया। आखिर ये गाय, कौआ, हंस, साँप, तोता और भौरा भक्त बन कर किस तरह मुक्त हो गए, बताता हूँ सुनो--

वह गाय बहुत दिन तक जीने के बाद आखिर बूढ़ी होकर मर गई। वह भगवान की कृपा से अगले जन्म में एक विष्णु भक्त की लड़की होकर पैदा हुई। उसके पिता ने उसका नाम प्रेम से सुशीला रखा। वह लड़की अपने नाम को सचमुच चरितार्थ करने वाली थी।

जब सुशीला सयानी हो गई तो उसका व्याह कर दिया गया। वह लड़की जितनी गुणवती थी उसका पति उतना ही दुष्ट और कञ्जूस निकला। वह रुपए के लिए नीच से नीच कार्य करने को भी तैयार रहता था। उसके पास खाने-कपड़े के लिए काफी था । तो भी वह दूसरों के आगे जाकर हाथ पसारता और कोई न कोई झूठे बहाने बना कर रुपए माँग लाता। लेकिन ये रुपए भी वह खर्च नहीं करता। वह उन्हें थैलियों में जमा करता । तिस पर वह हमेशा किसी न किसी बहाने से हमेशा सुशीला को मारा-पीटा करता था। लेकिन वह बेचारी कभी चूँ तक नहीं करती थी। वह पतिव्रता थी। इसलिए सब कुछ सह लेती थी।

उस ब्राह्मण के रिश्तेदारों को उसका स्वभाव मालूम था। इसलिए वे सभी उससे कतराये से रहते थे। अगर वे कभी उसके घर आते भी तो ठहरते नहीं। अगर वे ठहरना

भी चाहते तो ब्राह्मण कोई न कोई झूठ-मूठ का बहाना बनाकर उन्हें टाल देता। लेकिन सुशीला को इससे बड़ा दुख पहुँचता था। क्योंकि उसे अतिथि सत्कार करने में बड़ा आनन्द आता था। उसका विश्वास था कि अतिथि की सेवा करना भगवान की सेवा करना है। लेकिन वह पति की इच्छा के विरुद्ध क्या कर सकती थी !

भगवान ने देखा कि उनकी कृपा से वह गाय मनुष्य की योनि में सुशीला बन कर पैदा तो हुई। लेकिन वह अपने पति के कारण बहुत कष्ट पा रही है। उन्हें उस पर बहुत तरस आया। इसलिए वे एक दिन एक ब्रह्मचारी का वेष धर कर चुपके से उसके घर पधारे।

उस समय सुशीला का पति कहीं गाँव गया हुआ था। भगवान ने सोचा- "सुशीला के अतिथि सत्कार की परीक्षा लेने का यही अच्छा मौका है।" उन्होंने उसके घर आकर पुकार कर कहा- "माई! बहुत भूख लग रही है। क्या मुझे कुछ खाने को नहीं दोगी ?"



"जरूर दूँगी, बेटा ! तनिक ठहर जाओ ! अभी खाना पका कर खिला देती हैं।" सुशीला ने जवाब दिया।

"नहीं, नहीं ! अब मुझसे बिलकुल नहीं रहा जाएगा। बहुत भूख लग रही है। अगर बासी भात भी हो तो खिला दो। यह न सोचो कि मेहमान को बासी भात कैसे खिलाऊँ। जब जान पर बन पड़ती है, तब इन सब का विचार नहीं किया जाता। अगर तुमने मेरे पेट की आग बुझाई तो समझ लो कि सारा संसार तृप्त हो जाएगा। अगर बासी भात खाने से पाप भी होगा तो जप करके मिटा लूँगा।" उस ब्रह्मचारी ने उतावली करते हुए कहा।



अब बेचारी सुशीला क्या करती ? उसने पीढा लगा कर पत्तल बिछा दिया और बासी भात की हाँडी लाकर जो कुछ था सब परोस दिया। परोस कर वह घर का काम काज करने चली गई। लेकिन जब दो तीन क्षण में उसने लौट कर देखा तो पतल साफ़ था। कहीं एक दाना भी न बचा था। वह झूठा ब्रह्मचारी पलक मारते सब चट कर खाली पत्तल के सामने बैठा था।

उसने कहा- "माई ! मुझे तो अब भी भूख लग रही है। देखो तो, हाँडी के तले में कहीं एकाध दाने बचे हैं कि नहीं ?" सुशीला ने हाँडी में देखा। लेकिन उसे कहीं एक भी दाना नहीं दिखाई दिया। बेचारी ने तीन दिन से हर जून पति के लिए खाना पकाया था। लेकिन वे जब नहीं आए तो उसने पतिव्रता होने की वजह से खुद भी न खाकर सारा खाना बासी भात की हाँडी में डाल रखा था। अब इस बौने ब्रह्मचारी ने सारी हाँडी साफ़ कर डाली। उसे बड़ा अचरज हुआ। तिस पर तुर्रा यह कि वह कहता है-"मेरी भूख अब भी नहीं मिटी।"

सुशीला ने सोचा -"मुँह बाए खड़े रहने से कोई फायदा नहीं। उसने घर में जो कुछ खाने के लिए था सब कुछ उसके सामने लाकर रख दिया। वह सब हड़प गया। उसने कड़ाही में भरा सारा दूध लाकर रख दिया। वह उसे भी पी गया। तो भी उसकी भूख नहीं मिटी। उसने कहा- "माई! क्या और कुछ नहीं बचा है !"

तब सुशीला को याद आया कि उसने पति के लिए उसके गाँव जाने के पहले ही लड्डू बगैरह कुछ मिठाइयाँ बना कर रख दी थीं। लेकिन उसके पति ने कञ्जूसी के मारे

थोड़ी सी खाकर बाकी मचान के ऊपर छिपा दी थीं। शायद उन्हें लाकर देने से इस लड़के की भूख मिटे ।

सुशीला को मालूम था कि लौटने के बाद पति उन मिठाइयों को गिनेगा और उसे पीटेगा। तो भी उसने मेहमान की भूख मिटाने के लिए वे पकवान लाकर उसके सामने रख दिए। तुरन्त वह ब्रह्मचारी उन्हें साफ कर गया। अब भी वह आसन से नहीं उठा। "माई ! और कुछ दो न? " उसने फिर कहा।

अब सारा किस्सा सुशीला की समझ में आ गया। उसने जान लिया कि यह बौना ब्रह्मचारी कपट-वेष में है। उसने यह भी अनुमान कर लिया कि भगवान ही इस रूप में उसके घर पधारे हैं। तब उसने सोचा- "मैं भगवान की भूख कैसे मिटाऊँ? आखिर यों ही थोड़ी देर सोचने के बाद उसे एक उपाय सूझा। उसने सुन रखा था कि पवित्रता स्त्रियों के लिए अग्निदेव पिता के समान हैं और वे हमेशा उनकी सहायता करते हैं। इसलिए उसने अग्निदेव की प्रार्थना



की। तुरन्त अग्निदेव ने प्रत्यक्ष होकर उसका सारा घर तरह तरह की मिठाइयों, नमकीनों, पकवानों और छप्पनों ब्यञ्जनों से भर दिया।

यह देख कर भगवान विठ्ठल ने निजी रूप धारण कर सुशीला को दर्शन दिया और कहा "सुशीला ! तुम सच्ची पतिव्रता हो । इसीलिए अग्नि-देव ने प्रार्थना सुनते ही तुम्हारी सहायता की। मैं भी तुम्हारे अतिथि-सत्कार और श्रद्धा से प्रसन्न हूँ। बोलो, तुम कौन सा वर चाहती हो ?"

"भगवान! मुझे मुक्ति दीजिए !" सुशीला ने कहा।

"मुक्ति तो तुम्हें दूँगा ही। लेकिन पहले तुम बेटों और पोतों के साथ फल-फूल कर संसार का सुख भोग लो !" भगवान ने कहा।

"भगवान। मेरे तो एक लड़का भी नहीं ! फिर नाती-पोतों की तो बात ही क्या ?" सुशीला ने जवाब दिया।

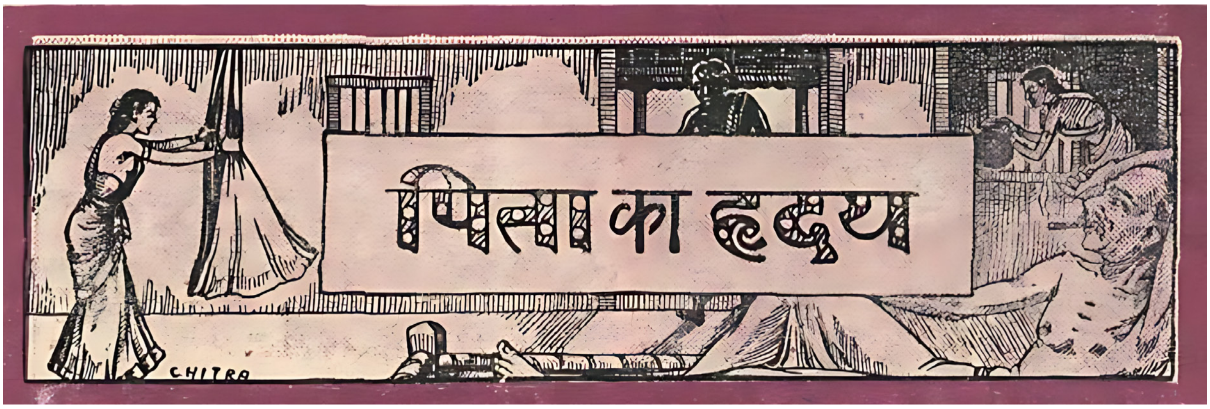
"तुम्हारे एक नहीं, पाँच लड़के पैदा होंगे। वे पाँचों भी अपने पहले जन्मों में मेरे भक्त थे। तुम भी पहले जन्म में एक गाय थीं। लेकिन तुम्हारी भक्ति से प्रसन्न होकर मैंने तुम्हें मानव जन्म दिया। उसी तरह एक कौआ, एक हंस, एक तोता, एक साँप और एक भौरा भी मेरे भक्त बने। वे पाँचों अब तुम्हारी कोख से पैदा होंगे।" यह कह कर भगवान अन्तर्धान हो गए।

जाते जाते भगवान ने सुशीला की एक और मलाई भी की। उन्होंने उसका साँसारिक जीवन सुखमय बनाने के लिए उसके पति का स्वभाव बदल दिया। अब उसकी सारी कञ्जूसी, नीचता और दुष्टता दूर हो गई। घर लौटते ही वह कञ्जूस से बड़ा भारी दानी बन गया। उसने झूठ बोल कर दूसरों के आगे हाथ पसारना छोड़ दिया।

कुछ ही दिनों में सब लोग उसकी बड़ाई करने लगे। अब वह सुशीला को कभी मारता पीटता नहीं था। यहाँ तक कि उसकी एक भी बात नहीं टालता था। उस दिन से उन दोनों का जीवन सुख से बीतने लगा।

एक एक करके सुशीला के पाँच लड़के पैदा हुए। उन लड़कों के शादी-ब्याह हुए और उनके भी लड़के पैदा हुए। इस तरह बहुत दिनों तक सुख-पूर्वक जीवन बिताने के बाद सुशीला ने पति के साथ मोक्ष प्राप्त किया।





किसी गाँव में एक किसान रहता था। उसका एक ही लड़का था। उसका नाम धन्ना था। जब धन्ना बड़ा हो गया तो सुखिया नाम की लड़की से उसका व्याह कर दिया गया। सुखिया के कई साल तक कोई बाल-बच्चे न हुए। बहुत व्रत किए गए। देवी-देवताओं को मनाया गया। आखिर बहुत दिन बाद एक लड़का पैदा हुआ।

लड़का होने के बाद घन्ना फूला न समाया। उसने सोचा कि पिता बन जाने के बाद उसकी जिम्मेदारी बहुत बढ़ गई है। पहले वह पिता के कोई काम बताने पर खूब मन लगा कर नहीं करता। लेकिन अब पिता के कहने की भी ज़रूरत न थी। वह अपने आप मन लगा कर घर का और खेती-बाड़ी का सारा काम करने लगा।

उस किसान का खपड़ेल मकान था। उसे छाए हुए बहुत दिन बीत गए थे। इसलिए सारा घर चू रहा था। उसे फिर से छाना था। किसान ने कहा कि उसे मजदूरों से छवा लेंगे। लेकिन धन्ना राजी न हुआ। "घर छाने के लिए मजदूरों की क्या जरूरत है ? क्या हम दोनों यह काम नहीं कर सकते! बेकार पैसा क्यों खराब करें ? उस पैसे से बच्चे के लिए कुछ न कुछ ख़रीद सकते हैं।" उसने कहा। यह सुन कर किसान ने मजदूर नहीं बुलाए ।

मजदूर होते तो वे नौ दस बजे के पहले कभी काम नहीं शुरू करते। लेकिन धन्ना तड़के ही छप्पर पर चढ़ गया। पुराने खपड़े नीचे फेंक कर वह नए खपड़ों से घर छाने लगा। इस काम में किसान, उसकी स्त्री

रमणलाल



और उसकी बहू, तीनों ने हाथ बँटाया। दस बजते बजते बहुत कुछ काम हो गया। किसान थक कर छाँह में आराम करने के लिए बैठ गया । धन्ना की माँ रसोई बनाने गई। इतने में लड़का रोने लगा तो धन्ना ने बहू को भी भेज दिया और अकेले काम करता रहा। ग्यारह बज गए। तब उसकी माँ ने आकर कहा- "तुमने सबेरे कुछ जलपान भी नहीं किया था। आओ, खा-पीकर फिर काम शुरू कर देना ।" लेकिन धन्ना नहीं गया। उसने कहा - "और थोड़ी दूर छाकर आ जाऊँगा ।" बारह बज गए। सूरज ठीक सिर पर चमकने लगा। गर्मी के दिन थे। किसान ने खा-पीकर बाहर आकर देखा तो धन्ना काम कर ही रहा था । "अरे भाई, अब बन्द कर दो न काम ? जरा धूप कम होने के बाद फिर शुरू करेंगे।" उसने कहा। "हर्ज क्या है ? अभी काम पूरा करके आ जाता हूँ।" धन्ना ने जवाब दिया। गर्मी की दोपहर की जलती धूप में अपने लड़के को भूखे- प्यासे काम करते देख कर पिता को बहुत दुख हुआ। उसने उसे तरह तरह से समझाया, फटकारा; आख़िर गिड़गिड़ाया भी। लेकिन धन्ना नीचे न उतरा।

पिता को बार बार अनुरोध करते देख कर वह झुँझलाया "मैं क्या कोई दुध-मुँहा बच्चा हूँ जो बार बार बुला रहे हो? तुम जाकर आराम करो न?" उसने कहा। लेकिन पिता का हृदय कैसे माने? अपने लड़के को मेहनत करते देख कर वह कैसे आराम करे? उसे कुछ न सूझा कि क्या करे? इतने में उसे धूल में खेलता हुआ पोता दिखाई दिया। तब उसे एक उपाय सूझा। वह लड़के को उठा कर घर के सामने ले गया। वहाँ उसने उसे

धूप में ऐसी जगह छोड़ दिया जहाँ से धन्ना उसे आसानी से देख सके। अपने लड़के को धूप में खड़ा देखते ही धन्ना फिर चिल्लाया-"अरे, देखते नहीं ? लड़का धूप में खड़ा है ! उसे अन्दर ले जाओ !" लेकिन किसान तो वहाँ था नहीं। वह अन्दर जाकर लेट गया था। "अरे, कोई सुनता ही नहीं ! मुन्ने को छाँह में ले जाओ !" धन्ना झट चिल्लाया । इतने में लड़के के पैर जलने लगे और वह रोने लगा । धन्ना का चिल्लाना सुन कर सास और बहू दोनों अन्दर से दौड़ीं। इसके पहले ही धन्ना जल्दी-जल्दी उतरा और लड़के को उठा कर घर में ले जाकर रख दिया। "आज पिताजी को क्या हो गया है ? उन्होंने बच्चे को धूप में छोड़ दिया था!" उसने अपनी माँ से कहा ।

"क्यों, इसमें हर्ज क्या है ? " यह सुन कर किसान ने जवाब दिया।

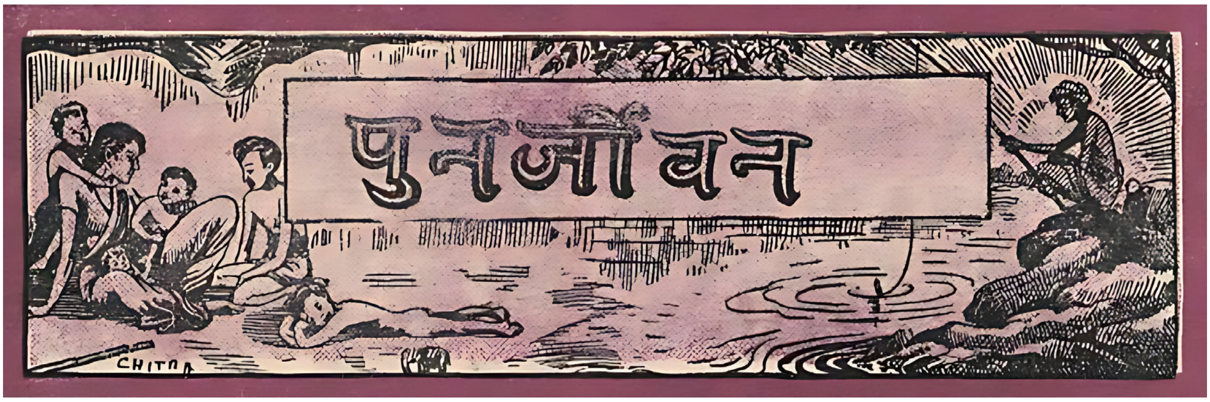
"अगर धूप लग जाती तो ?" धन्ना ने क्रोध से कहा ।

"हाँ, अब तुम रास्ते पर आ गए ! क्या अब तुम्हारी समझ में आ गया कि तुम्हें धूप में काम करते देख कर मेरे



मन को कितनी पीड़ा हो रही थी ? मैंने तुम्हें बार बार काम बन्द करने को कहा था। लेकिन क्या तुमने मेरी बात पर कुछ भी ध्यान दिया ? नहीं, जब तुम्हारा लड़का धूप में खड़ा हो गया तब तुम्हें छप्पर पर से उतरने की सूझी। जान लो, हर एक को अपने लड़के से वैसा ही प्रेम रहता है।' किसान ने धन्ना से कहा ।

तब धन्ना की आँखें खुली । उसकी समझ में आ गया कि उसके पिता क्यों बार बार उससे नीचे उतरने का आग्रह कर रहे थे ।



पुराने जमाने में जलधर नाम का एक मछुआ रहता था। वह मछली मारने में बड़ा होशियार था। लेकिन वह हमेशा इधर-उधर घूमता रहता था। कभी मन लगा कर काम नहीं करता था। इसलिए उसकी बीबी और बाल-बच्चों को बहुत कष्ट होता था।

एक रात की बात है। उस मछुए ने एक सपना देखा। उस सपने में कोई उससे कह रहा था - "ओ जलधर ! तुम अपने बाल-बच्चों को कब तक भूखों मारोगे ? मेरी बात सुनो। कल सवेरे उठते ही पूरब की ओर जाना। कुछ दूर जाने पर शुक-सरोवर नाम का एक तालाब दिखाई देगा। उस तालाब के किनारे पीपल का एक पेड़ है। पीपल की एक टहनी तोड़ कर उससे तुम तालाब का पानी पीटो। फिर देखो, क्या होता है ? विश्वास रखो; इससे तुम्हें बहुत लाभ होगा।"

यह सुनते ही जलघर का सपना टूट गया। पर उसको अपने सपने पर कुछ भी विश्वास न हुआ। इसलिए वह करवट बदल कर फिर खर्राटे लेने लगा। सबेरे उठ कर वह पूरब की ओर नहीं गया।

लेकिन दूसरी रात को भी उसने वही सपना देखा। तो भी उसको सपने की बात पर विश्वास नहीं हुआ।

लेकिन जब लगातार दस दिन तक सपने में उसे वही शब्द सुनाई दिए, तो उसने सोचा कि हो न हो; इसमें कुछ न कुछ रहस्य जरूर है।

वह दूसरे दिन सवेरे उठ कर उस सरोवर के पास गया और पीपल की एक टहनी तोड़ कर पानी को पीटने लगा। शाम तक वह पानी पीटता ही रहा। आखिर उस जगह एक भँवर पैदा हो

राकेश प्रसाद

गया और उसमें से एक नाग-कन्या निकली। "तुम क्या चाहते हो ?" उसने पूछा ।

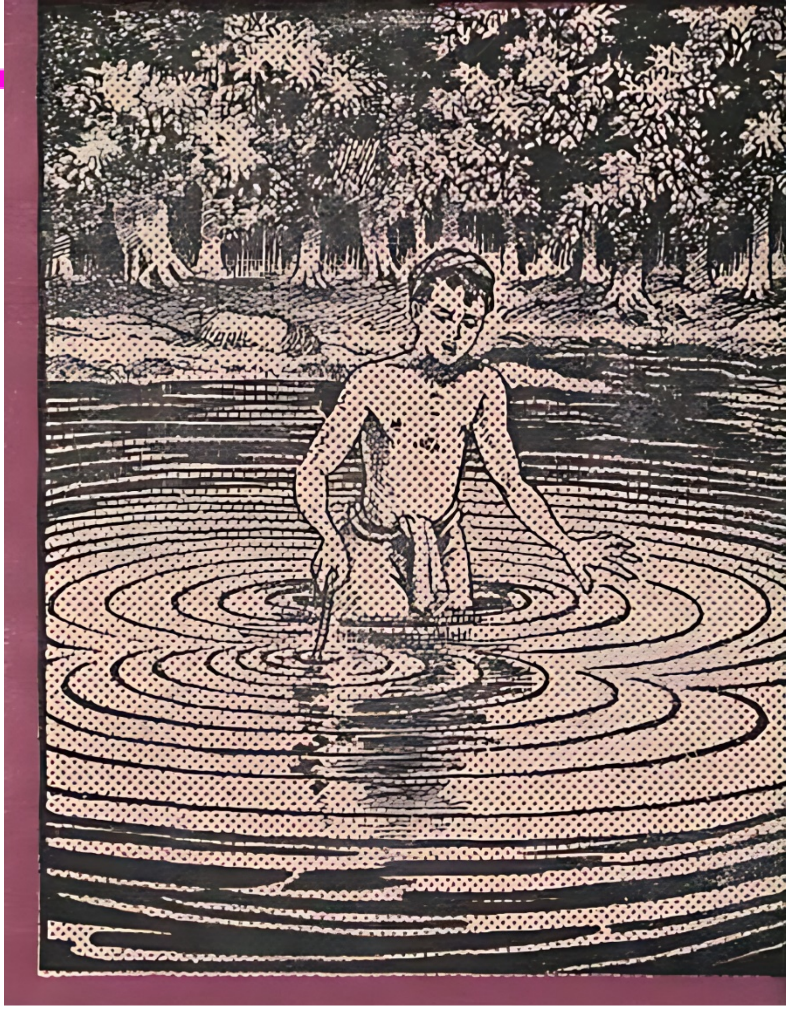
"मैं धन-दौलत चाहता हूँ।" जलधर ने जवाब दिया।

"अच्छा, मैं तुम्हें एक हीरा देती हूँ। उसे ले जाओ। उससे तुम्हारी इच्छा पूरी हो जाएगी।लेकिन इसके बदले तुम्हें अपने बेटों में से एक को मुझे देना पडेगा।" उस देवी ने कहा ।

तब जलधर ने सोचा- "जल में रहने वाली यह देवी जमीन पर नहीं आ सकती। फिर कैसे मेरे घर आकर मेरे बेटे को ले जाएगी ? इसलिए इसकी बात मान लेने में कोई हर्ज नहीं।" यह सोच कर जलधर ने नाग-कन्या की शर्त मंजूर कर ली।

देवी ने एक लाल लाल चमकता हुआ हीरा उसे दिया। लेकिन हाथ में लेते समय वह हीरा नीचे गिर गया और मुठ्ठी भर राख बन गया । यह देख कर जलधर बहुत पछताया ।

लेकिन देवी ने उसे धीरज देकर कहा-"घबराओ नहीं; यह राख ही तुम्हारे काम आएगी। इसे लगा कर



तुम जहाँ जाओगे वहीं कामयाबी मिलेगी। इसे पानी में घोल कर पी लेने से भयङ्कर रोग भी दूर हो जाएँगे। अब तुम जाओ।"

तब जलधर ने पूछा- "देवी! यह राख तो बहुत थोड़ी है। जल्दी ही ख़तम हो जाएगी। तब मैं क्या करूँगा ?"

तब देवी ने कहा- "इसकी चिन्ता मत करो। तुम फिर यहाँ आ जाना। मैं और थोड़ी सी राख दे दूँगी। मगर उसके बदले एक और लड़के को मुझे सौंपना होगा।" यह कह कर देवी ओझल हो गई।



तब जलधर खुशी-खुशी घर गया। दूसरे दिन मछलियाँ बेचने पर उसको बहुत सा रुपया मिला। किन्तु घर लौटते ही उसकी स्त्री ने रोते-पीटते हुए कहा- "मुन्ना घर से ग़ायब है। न जाने कहाँ चला गया ?"

तब मछुए ने अपनी स्त्री से सारा किस्सा कह दिया। "तुम कुछ चिन्ता न करो। चार बेटे काफी हैं।" उसने उसे धीरज बँधाया।

इस तरह जलधर कुछ दिनों तक खूब सुख-चैन से रहा। पर एक दिन हीरे की राख ख़तम हो गई। वह फिर नाग कन्या के पास जा पहुँचा।

देवी ने फिर थोड़ी सी राख उसे दे दी। लेकिन इसके बदले उसका और एक प्यारा लड़का ग़ायब हो गया। इस बार भी जलधर ने अपनी स्त्री को किसी तरह समझा-बुझा दिया।

यों एक-एक करके उसने अपने पाँचों बच्चों और आख़िर अपनी स्त्री को भी खो दिया। रुपया-पैसा तो उसने बहुत कुछ कमाया। लेकिन हाथ में बचा कुछ भी नहीं। ग़ज़ब तो यह था कि जब तक हीरे की राख उसके पास रहती, तब तक धन-दौलत भी साथ देती। लेकिन राख ख़तम होते ही वह पहले की तरह ग़रीब हो जाता था।

अब वह जिस काम में हाथ डालता वही बिगड़ जाता। आख़िर सब लोग उसकी खिल्ली उड़ाने लगे। कुछ दिन में उस मछुए का जीना दूभर हो गया। उसने जङ्गल की राह पकड़ी।

राह में उसे एक जगह एक छोटा सा तालाब दिखाई दिया। उस तालाब में खूब बड़ी-बड़ी मछलियाँ थीं। उन्हें देख कर उसका मन एक बार खिल गया। उसने

जाल फेंका। लेकिन सब मछलियाँ भाग गईं। सिर्फ़ एक छोटी सी मछली फँस गई।

जब जलधर ने उस मछली को मारना चाहा, तो उसने मनुष्य की सी बोली में कहा -"पिता ! पिता ! मुझे मत मारो।"

यह सुन कर पहले तो उसे बड़ा अचरज हुआ। लेकिन धीरे-धीरे उसने जान लिया कि उसकी करनी के कारण उसके बाल-बच्चे ही इस रूप में यहाँ पड़े हैं। अब वह बेचारा बहुत पछताने लगा । तब उसने शुक-सरोवर के पास जाकर देवी की प्रार्थना की। देवी के प्रत्यक्ष होने पर उसने कहा- "देवी ! अब मुझे अक्ल आ गई है। अब मैं अपने किए पर पछता रहा हूँ । संसार में मुझे कुछ नहीं सुहाता है। इसलिए में फिर तुम्हारी शरण आया हूँ। लेकिन इस बार मुझे धन-दौलत वगैरह नहीं चाहिए। सिर्फ मुझे बिछुड़ों से मिला दो । इसके सिवा मैं और कुछ नहीं चाहता । बाल-बच्चों को खोकर मैं अब किसके लिए जीऊँ ? मेरे लिए अब क्या रह गया है ? इसलिए कृपा करके मुझे फिर अपने बाल-बच्चों से



मिला दो ! नहीं तो मुझे भी मार डालो या मछली बना कर उसी तालाब में छोड़ दो।" वह बहुत गिड़गिड़ाने लगा।

तब देवी ने कहा - "मूर्ख ! अगर तुझे यह बात पहले ही सूझती तो कितना अच्छा होता ? जब तेरे पास धन-दौलत थी तब तूने बाल-बच्चों का कुछ भी ख्याल नहीं किया। अब मैं क्या करूँ? मैं तो बदले में कुछ लिए बिना तुम्हारी कोई भलाई नहीं कर सकती।"

यह सुन कर जलधर ने सैकड़ों प्रणाम करके कहा- 'देवी! अगर तुम चाहो तो

इतना आसानी से कर सकती हो। यह तुम्हारे लिए कोई बड़ी बात नहीं है ।" तब देवी ने तरस खाकर उसे एक सलाह दी- "अच्छा, सुनो! एक उपाय है। मैं तुम्हें एक साँप बना दूँगी जिससे तुम पानी में और जमीन पर भी दोनों जगह चल-फिर सको। तुम जमीन पर से अनमोल हीरे और समुन्दर के तले से सुन्दर मोतियाँ निकाल-निकाल कर लाया करो और मुझे देते रहो। इस तरह तीन महीने तक मेरी सेवा करो। तीन मास पूरे होते ही तुझे बाल-बच्चों से मिला दूँगी ।"

अब वह बेचारा मछुआ क्या करे ? इनकार तो कर नहीं सकता था ! क्योंकि देवी को खुश किए बिना वह कभी बाल-बच्चों से मिलने की आशा भी नहीं कर सकता था। इसलिए लाचार होकर उसने स्त्री और सन्तान के मोह से देवी की बात मान ली। तुरन्त जलधर एक साँप बन गया। अब वह तालाब में घुस कर अपने बाल-बच्चों को देख सकता था।

उसने तीन महीने तक दिन-रात मेहनत करके जमीन से हीरे और पानी से मोती निकाल कर देवी को ला दिए। जब तीन महीने बीत गए तो देवी ने प्रसन्न होकर कहा-"तुमसे मैं बहुत खुश हूँ । इसलिए अब मैं तुम्हें अपने घर जाने की इजाजत देती हूँ। यह कह कर उसने उसे फिर आदमी का रूप दे दिया। उसके बाल-बच्चे पहले ही शाप से छूट कर किनारे पर जा खड़े हो गए थे। देवी का आशीर्वाद पाकर वे सभी आनन्द से घर लौटे और सुख से जीवन बिताने लगे।





इस तरह सोलहों सिंगार करके नागवती जब उसके पास जाकर खड़ी हो गई, तो उसे देख कर फकीर को और भी नशा चढ़ गया।"क्यों मेरी जान ! आज तो तुम पर आँख ठहरती ही नहीं !" उसने कहा।

"मेरा बारह साल का व्रत पूरा होने को आया है।" नागवती ने जवाब दिया।

यह सुनते ही फकीर खुशी से उछल पड़ा और चाहा कि उसे अपनी गोद में उठा ले।

लेकिन नागवती ने उसे रोकते हुए कहा-"ठहरो ! जरा ठहरो ! अगर तुमने मुझे छुआ भी तो तुम्हारा सिर टूक-टूक हो जाएगा। व्रत पूरा होने में अभी नौ दिन बाकी हैं। इसलिए इन नौ दिनों तक तुम किसी तरह सब्र करो। उसके बाद मैं कहीं भागी तो नहीं जा रही हूँ।"

"तो क्या व्रत के बाद तुम मेरी इच्छा पूरी करोगी ?" फकीर ने पूछा।

"हाँ ! लेकिन उसके पहले एक बात पूछना चाहती हूँ।" नागवती ने कहा।

"पूछो ! खुशी से पूछो ! तुम्हें कौन रोकता है ?" फकीर ने कहा।

"तो मुझे बता दो कि तुम्हारी जान कहाँ रखी है ? क्योंकि अगर तुमको किसी ने मार डाला तो फिर कौन मेरी ख़बर लेगा ?" नागवती ने कहा।

तब फकीर ने हँसते हुए कहा- "अरी पगली ! मुझे कोई नहीं मार सकता। क्योंकि मेरी जान ऐसी जगह छिपी है कि किसी



को उसका पता नहीं लग सकता। मेरी जान के बारे में तुम कुछ फिक्र न करो ! मैंने उसकी खूब अच्छी हिफाजत कर रखी है।" फकीर ने उसे धीरज बँधाया।

नागवती ने मुँह फुला कर कहा- "मुझे कैसे विश्वास हो कि तुम्हारी जान को कोई ख़तरे में नहीं डाल सकता ? हाँ, तुम अगर मुझे बता दो कि तुम्हारी जान कहाँ छिपी है, तो मुझे भरोसा हो जाए।"

"वह ऐसी जगह छिपी है जहाँ किसी इन्सान की तो बात ही क्या, देवताओं तक की पहुँच नहीं हो सकती। क्यों, अब तुमको विश्वास होता है कि नहीं ?" फकीर ने जवाब दिया।

"अगर वह ऐसी जगह रखी है तो फिर बता देने में हर्ज क्या है ?" नागवती ने गुस्सा दिखा कर कहा।

तब उस को राजी करने के ख्याल से फकीर ने अपने प्राणों का रहस्य बताना शुरू कर दिया- "सात सागर पार पत्थरों का देश है। पत्थरों के उस देश में पत्थरों का एक क़िला है। उस क़िले के बीच लोहे का किला है। उस किले में पाँच सौ बेल के पेड़, तीन सौ कटहल के पेड़, नौ सौ साल के पेड़ और सात सौ नीम के पेड़ हैं। इन पेड़ों के बीचों-बीच एक क़लमी आम का पेड़ है। उस पेड़ के खोखले में सात बर्रों के छत्ते हैं । सब से आख़िरी छत्ते में सोने का पिञ्जरा है। पिञ्जरे में पाँच रङ्गो वाला सुग्गा है। उस सुग्गे की गर्दन में मेरी जान छिपी है। जब तक उस तोते के तन में प्राण रहेंगे, मैं भी नहीं मरूँगा।" फकीर ने नागवती को समझाया।

यह सुन कर नागवती ने बहुत खुशी जताई। लेकिन मन में उसके सारे मनसूबों पर पाला पड़ गया। उसका दुधमुँहा बच्चा सातों सागर पार कर, सभी क़िले लाँघ कर उस सुग्गे को कैसे पकड़ लाएगा? वह

फकीर को मार कर उसको क़ैद से कैसे छुड़ाएगा ? तिस पर व्रत पूरा होने में सिर्फ आठ ही दिन बाकी हैं !

तो भी फकीर ने जो कुछ बताया वह एक पुरजे पर लिख कर नागवती ने बुढ़िया मालिन के द्वारा अपने लड़के को पहुँचा दिया। वह पुरजा देखते ही बालचन्द्र ने बुढ़िया से कहा-" नानी ! पिताजी ने बहुत लोगों को उधार दिया था। उसकी मोहलत बीती जा रही है। इसलिए मैं जाता हूँ। रुपए वसूल कर लाऊँगा। खाना पका कर मुझे कुछ कलेवा दे दो !"

मालिन ने उसकी बात सच मान ली। उसने तुरन्त खाना पका कर उसे खिला दिया और कलेवा भी गठरी में बाँध दिया । बालचन्द्र झट वहाँ से चल दिया और चलते चलते दो तीन दिनों में तीन चार नगरों को पीछे छोड़ कर समुन्दर के किनारे पहुँच गया। वह वहाँ जाकर बारह शाख वाले एक बरगद के नीचे बैठ कर आराम करते हुए इस तरह सोचने लगा- "हाय ! आठ दिन की अवधि में दो तीन दिन तो यों ही बीत गए। "मैं





बिना किसी नाव के यह भयङ्कर समुद्र कैसे पार करूँ? कहीं बाकी दिन भी बीत गए तो फिर सब कुछ चौपट हो जाएगा। हाय ! अब मैं क्या करूँ ?" बालचन्द्र गहरी चिन्ता में पड़ गया।

इतने में उसे पेड़ पर चिड़ियों की चीख-पुकार सुनाई पड़ी तो उसने सिर उठा कर देखा। उसे एक बहुत बड़ा काला नाग पेड़ पर चढ़ता दिखाई दिया। तब उसने अपनी तलवार निकाल कर साँप पर वार किया। उस साँप ने उस पर लपक कर उसे डसा और वार के कारण खुद भी तड़प कर जान दे दी। थोड़ी देर में जहर बालचन्द्र के खून में फैल गया। उसके अङ्ग ऐंठ गए। फेन उगलते हुए वह वहीं ठण्डा हो गया।

बालचन्द्र के मरते ही श्रीनगर में उसके लगाए हुए बेले के पौधे सूख गए। तुरन्त नागवती की छहों बहनों ने जान लिया कि अब बालचन्द्र संसार में नहीं रहा। वे धाड मार मार कर रोने लगीं।

थोड़ी देर बाद दो बहुत बड़े पञ्छी अपनी चोञ्चों से एक हाथी को उठाए, समुन्दर पर से उड़ते हुए उस वट-वृक्ष के पास आए। बालचन्द्र ने इन्हीं पञ्छियों के बच्चों को बचाने के लिए अपने प्राण अर्पण किए थे। वे पञ्छी अब तक कई बार बच्चे जन चुके थे। लेकिन बार बार वह महा-सर्प उन्हें निगल कर भाग जाता था। लेकिन इस बार उनके बच्चे बच गए। पञ्छियों ने पेड़ के नीचे मरे पड़े हुए भयङ्कर साँप को देखा। बगल में बालचन्द्र की लाश पड़ी थी और उसकी खून से लथपथ तलवार भी दिखाई दी। बस, सारा किस्सा समझ में आ गया। तब नर पक्षी तुरन्त उड़ कर सञ्जीवनी-पर्वत पर पहुँच गया। दूसरे दिन सवेरा होते होते वह सञ्जीवनी जड़ी ले आया। उसने वह जड़ी जब मरे

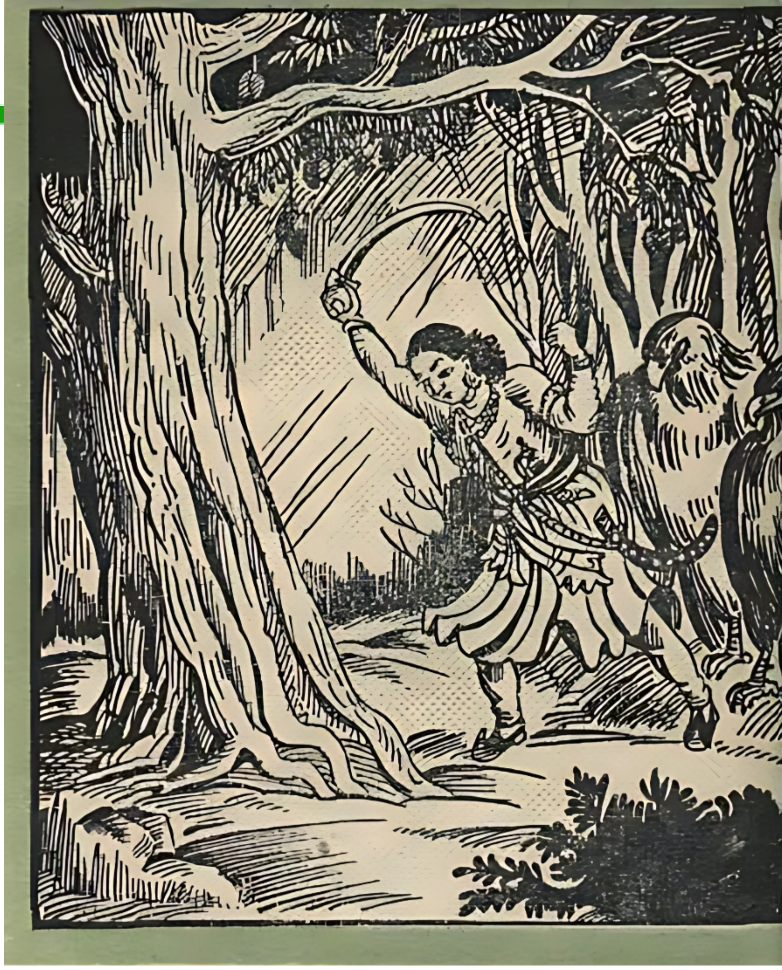
हुए बालचन्द्र की नाक पर धर दी तो वह झट आँख मलते हुए उठ बैठा। उसके उठते ही श्रीनगर में बेले के पौधे भी लहलहाने लग गए। नागवती की बहनों के आनन्द का ठिकाना न रहा। सारे शहर में उत्सव मनाया गया।

तब उन पञ्छियों ने बालचन्द्र से पूछा- "हे वीर पुरुष ! तुमने हमारे बच्चों की जान बचाई है। बताओ, इसके बदले तुम्हारे लिए हम क्या करें ?"

"मुझे सात सागर पार पत्थरों के देश में जाना है।' बालचन्द्र ने जवाब दिया।

"तो आओ, हम तुम्हें वहाँ पहुँचा देते हैं। हम तो रोज़ वहाँ आया-जाया करते हैं।" पञ्छियों ने कहा।

यह कह कर वे पञ्छी एक ताड़ का पेड़ उखाड़ लाए। उन्होंने अपनी चोञ्च से उस पेड़ के बीच तने में खोखला बना दिया और बालचन्द्र को उसमें लेट जाने को कहा। फिर दोनों पञ्छी उसके दोनों सिरे चोञ्च से पकड़ कर उड़ने लगे। वे इस तरह उड़ते उड़ते सातों सागर पार कर पत्थरों के देश में, पत्थरों के क़िले लाँध कर लोहे के क़िले के



बीच जङ्गल में पहुँचे और वहाँ बालचन्द्र को जमीन पर रख दिया। वह जङ्गल बहुत घना था। बालचन्द्र अपनी माँ का नाम लेते हुए, तलवार के एक एक बार से एक एक पेड़ को काटता हुआ मुश्किल से आगे बढ़ा और किसी न किसी तरह क़लमी आम के पेड़ के पास पहुँचा। उसने उसे भी एक ही वार में काट डाला। तब उसे बर्रों के छत्ते दिखाई दिए।

लेकिन इतने में उन पञ्छियों ने जो यह सब देखते वहीं खड़े थे, उसे मना करते हुए कहा- "ठहरो! क्या कर रहे हो ? तुमने वह पेड़ क्यों काट डाला ? उसी में भुतहे फकीर



की जान रखी है। अगर उसका बाल भी बाँका हुआ तो फकीर तुम्हें जीता न छोड़ेगा।"

"मैं फकीर के ही कहने से यहाँ आया हूँ । फकीर ने ही मुझे अपनी जान लाने के लिए भेजा है।" बालचन्द्र ने जवाब दिया। "तुम उसकी जान ले कैसे जाओगे ? उन छत्तों में जहरीले बर्रें हैं। उनके डक की चोट खाकर कोई भी नहीं जी सकता।" उन पञ्छियों ने कहा।

"मैं उन्हें अपनी तलवार से मार डालूँगा।" बालचन्द्र ने जवाब दिया।

"उन लाखों बर्रों को तुम कैसे मारोगे ? यह काम तुमसे होने वाला नहीं। क्यों बेकार जान गँवाते हो ? चलो, चुपचाप लौट चलें ।" उन पञ्छियों ने सलाह दी।

"तो मैं यहीं अपनी जान दे दूँगा। लेकिन फकीर की जान वाला सुग्गा लिए बिना यहाँ से नहीं टलूँगा। अगर चाहो तो तुम दोनों लौट जाओ।" बालचन्द्र ने हठ किया।

तत्र उन पञ्छियों ने थोड़ी देर तक आपस में कानाफूसी करके एक अच्छा सा उपाय सोचा। नर पक्षी ने बालचन्द्र को ले जाकर एक घनी झाड़ी में छिपा दिया। उसके बाद उसने उस आम के पेड़ को एक लात मारी । तुरन्त छत्तों को धक्का लगा और बर्रे सन्न की आवाज करते हुए उड़ने लगे। तब मादा पक्षी ने पूरी ताकत लगा कर अपने पंख फड़फड़ाए। उसके इस तरह पंख फड़फड़ाने से ऐसी जोर की हवा चली कि उससे वे सब बर्रें मीलों दूर तक उड़ गए।

तब नर पक्षी अपनी चोञ्च से उस खोखले में का पिञ्जरा उठा लाया। उसने उसे झाड़ी में बैठे हुए बालचन्द्र के हाथ में दे दिया और कहा-"बाबा ! अब तक फकीर को मालूम हो गया होगा कि उसकी जान किसी की मुठ्ठी में पड़ गई है। इसलिए वह तुरन्त यहाँ आ जाएगा।

अगर अब जरा भी देर करोगे तो हमारी जान भी खतरे में पड़ जाएगी। इसलिए उस सुग्गे को तुरन्त अपने काबू में कर लो !" उन्होंने उसे चेता दिया।

तुरन्त बालचन्द्र ने सुग्गे को पिञ्जरे से निकाल लिया। उसने अपने दोनों कानों के कुण्डल निकाल कर उनसे उसके दोनों पैरों में बेड़ी सी पहना दी। बस, वहाँ नगवाडीह में फकीर के दोनों पैर निकम्मे हो गए। उसने सोचा -"या तो किसी दुश्मन ने मेरी जान चुरा ली है, या मेरा सुग्गा छूट कर बाहर उड़ते हुए किन्हीं लता-चेलों में फँस गया है।" इसके बाद वे पञ्छी बालचन्द्र को फिर ताड़ के खोखले में बिठा कर घर की ओर उड़ चले। सातों सागर पार कर वे वट-वृक्ष के पास आ पहुँचे। वहाँ उन्होंने अपने बच्चों को चारा चुगाया। फिर बालचन्द्र से कहा- "आओ, अब हम तुम्हें घर पहुँचा दें !"

लेकिन बालचन्द्र ने कहा कि "मैं पैदल ही चला जाऊँगा" और उनसे कृतज्ञता जता कर बिदा ली।

चार दिन तक लगातार चलने के बाद बालचन्द्र नगवाडीह में बुढ़िया मालिन के घर जा पहुँचा।



"क्यों, रुपए वसूल कर आए बेटा ?" - बुढ़िया ने पूछा ।

"नहीं, मुझे देखते ही कर्जदार सब जहाँ के तहाँ भाग गए। इसलिए मैंने कागज पत्र सब फाड़ दिए और चुपके से लौट आया।" बालचन्द्र ने जवाब दिया।

यह सुन कर बुढ़िया रोने-धोने लगी । तब बालचन्द्र ने उसे दिलासा देते हुए कहा-"रोओ नहीं, नानी ! भगवान की कृपा से हम कुछ ही दिनों में मालामाल होने वाले हैं।"

इसके बाद बालचन्द्र हाथ में पिञ्जरा लिए प्यारी बाई के घर जा पहुँचा । बाहर एक नौकरानी कोल्हू में तेल



पेर रही थी । बालचन्द्र पिञ्जरा हाथ में लिए उछल कर कोल्हू पर चढ़ गया और बैल के साथ साथ चक्कर लगाने लगा । तुरन्त फकीर भी, जो बगीचे में सैर कर रहा था चक्कर लगाने लगा। बालचन्द्र ने बैल को और भी जल्दी जल्दी चलाया। वहाँ फकीर भी वेग से चक्कर मारने लगा। उसके बाद बालचन्द्र सुग्गे को हाथ में लेकर बाग में फकीर के नजदीक गया।

"अरे ! तू मेरी जान चुरा लाया है। ला, वह मुझे दे दे !" फकीर ने कहा। "अच्छा, अच्छा, देता हूँ; जरा ठहर ! पहले यह तो बता कि नागवती तेरी क्या होती है ?" बालचन्द्र ने पूछा । "वह तो मेरी बीबी है।" फकीर ने जवाब दिया।

यह सुन कर बालचन्द्र को बहुत गुस्सा आ गया। उसने सुग्गे का गला पकड़ कर दबाया। तब फकीर "हाय ! हाय !" करता दोनों हाथ जोड़ कर बोला –"अरे, मुझे न मार ! नागवती मेरी माँ होती है ।"

तब बालचन्द्र ने कहा- "फकीर ! मैंने सुना है कि तुम बहुत से मन्त्र-तन्त्र जानते

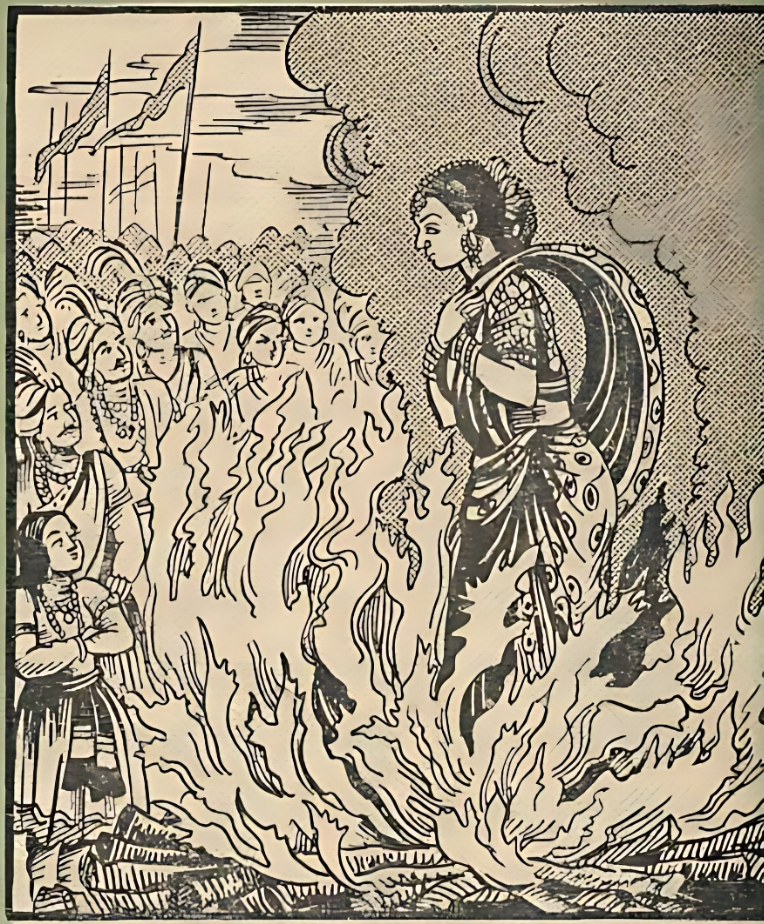
हो। मुझे भी एकाध मन्तर बता दो न !" "मैं अपने मन्त्र किसी को नहीं बताता ।" फकीर ने कहा ।

"तब मैं इस सुग्गे की गरदन मरोड़े देता हूँ।" बालचन्द्र ने तोते का टेटुआ पकड़ा।

तब लाचार होकर फकीर ने अपने सारे मन्त्र बालचन्द्र को बता दिए। उसने अपनी जादू की लकड़ी, छड़ी वगैरह बालचन्द्र को दे दीं और इस्तेमाल भी सिखा दिया। फिर उसने पत्थर बने हुए बालचन्द्र के पिता को और सारी सेना को जिन्दा कर दिया ।

नागवती क़ैद से छूट गई। बालचन्द्र ने उसे पालकी में बिठाया। एक ओर फकीर और दूसरी ओर प्यारीबाई से उसे ढोकर ले चलने के लिए कहा। बेचारों को लाचार होकर वैसा ही करना पड़ा। आखिर बुढ़िया मालिन को भी साथ लेकर सभी वहाँ से चल दिए।

वे नयन - नगर से होते हुए तोता-नगर जा पहुँचे। वहाँ बालचन्द्र ने अपने माँ-बाप की इजाजत लेकर उस नगर की राजकुमारी से जिसे उसी ने जिन्दा किया था, बड़ी धूम-धाम के साथ ब्याह कर लिया। वहाँ से गङ्गा-नगर जाकर उसने वहाँ की

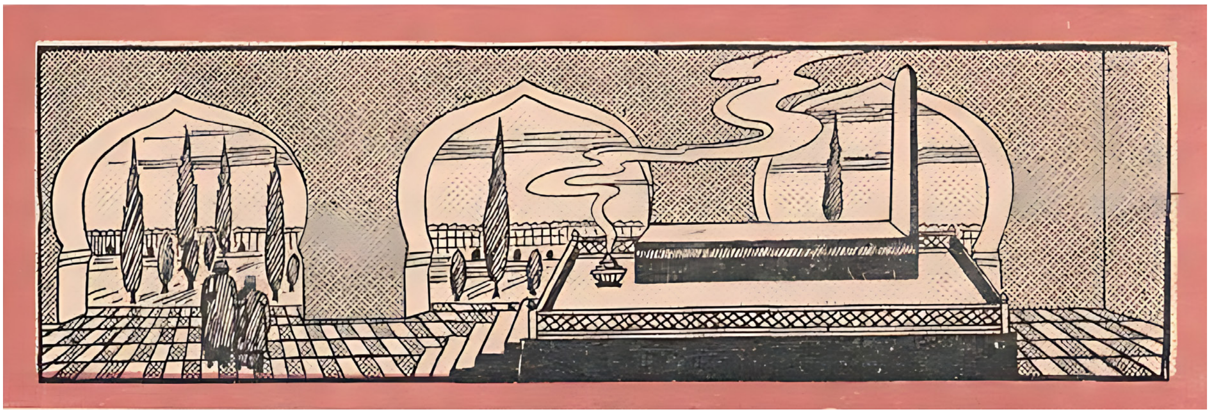


राजकुमारी से भी ब्याह कर लिया। इसके बाद सभी श्रीनगर जा पहुँचे। उन को देख कर नागवती की बहनें खुशी के मारे पागल सी हो गईं। सिर्फ नागवती ही कैद से नहीं छूटी; बल्कि उनके पति भी फिर से जी कर घर लौट आए। छहों बहनों ने फिर हाथों में चूड़ियाँ पहन लीं और माँग में सिन्दूर लगा लिया। उनका खोया हुआ सुहाग उन्हें मिल गया। लेकिन इस आनन्द के समय भी एक बखेड़ा उठ खड़ा हुआ। नागवती के पति ने कहा – "यह इतने दिन तक फकीर की कैद में थी। कैसे विश्वास करूँ कि इसका पातिव्रत्य बना हुआ है ? मैं इसे स्वीकार नहीं कर सकता।" तब बालचन्द्र ने

खौलते हुए तेल में अपनी अँगूठी डाल दी और माँ से निकालने को कहा। नागवती ने वैसा ही किया। तब उसके पति ने कहा- "न जाने, यह फकीर के निकट कौन कौन से मन्त्र सीख आई है ! मैं इस पर विश्वास नहीं कर सकता।" तब बालचन्द्र ने एक बहुत बड़ा गढ़ा खुदवाया और उसमें धधकती आग जलवा दी। नागवती उस आग में कूद पड़ी। पर उसका बाला भी बाँका न हुआ। न उसका आँचल ही जला; न उसका सिन्दूर ही मिटा। बहुत देर तक उस आग में रह कर नागवती हँसती हुई बाहर निकली। तब उसके पति को विश्वास हो गया। उसे बहुत आनन्द हुआ। सारे नगर में खुशियाँ मनाई जाने लगीं। बड़े बड़े जुलूस निकाले गए । चार पाँच दिन इसी तरह बिता कर बालचन्द्र फकीर के साथ फिर नगवाडीह गया। उसने वहाँ का सारा क़ीमती सामान गाड़ियों पर लाद कर श्रीनगर रवाना कर दिया। तब फकीर ने कहा - "अब मेरा सुग्गा मुझे दे दो न?" लेकिन बालचन्द्र ने नहीं दिया। तब फकीर ने उतावली से झपट कर छीन लेना चाहा। नतीजा यह हुआ कि सुग्गे का सिर तो बालचन्द्र के हाथ में रह गया और धड़ फकीर के हाथ आ गया। तुरन्त भुतहे फकीर ने "या अल्ला ! या खुदा!" कहते हुए जान छोड़ दी।

तब बालचन्द्र ने फकीर की लाश को दफनवा दिया और उसकी कब्रगाह के चारों ओर एक सुन्दर बगीचा लगवा दिया। वहीं उसने एक कोठी बनवा कर उसमें फकीर की सारी जायदाद रखवा दी। उसके बाद उसने बहुत से साधु-सन्यासियों और फकीरों को बुला कर दान-धर्म किया। फिर उसने फकीर की कब्र पर दिया बालने के लिए तीन फकीरों को नियुक्त किया और उन्हें फकीर की सारी जायदाद दे दी। इसके बाद बालचन्द्र श्रीनगर लौट कर सुख से राज करने लगा। वह अपने माँ-बाप के साथ बहुत दिन तक जीता रहा ।

[समाप्त]





कहते हैं कि पुराने ज़माने में शान्तिपुर नाम का एक शहर था। उस शहर में रोज़ किसी न किसी घर में से एक न एक आदमी ग़ायब हो जाया करता था। बहुत लोगों ने इसके कारण की खोज की। लेकिन किसी को कुछ पता न चला।

आख़िर एक दिन वीरवर्मा नामक एक आदमी ने शहर वालों से कहा- "आप लोग घबराइए नहीं। मैं जाकर इस रहस्य का पता लगा आता हूँ। फिर देखेंगे कि इसके बारे में क्या किया जा सकता है ?"

यह कह कर वह एक घोड़े पर सवार कर वहाँ से चला ।

जाते जाते वीरवर्मा को एक बहुत ही ऊँचा बालू का टीला दीख पड़ा। उसके नज़दीक ही एक तालाब था। तालाब में एक नाव बँधी थी। तब तक वीरवर्मा बहुत थक गया था। इसलिए उसने सोचा- "चलूँ, तालाब में पानी पी लूँ और थोड़ी देर यहीं कहीं आराम कर लूँ।" यह सोच कर वह तालाब के किनारे आया। तालाब में ऐसे बड़े-बड़े कछुए दिखाई दिए कि वीरवर्मा अचरज में पड़ गया। नाव पर चढ़ कर वह तालाब में गया और एक छोटे से कछुए को पकड़ लाया। लेकिन न जाने कैसा जादू हुआ कि वह कछुआ पानी से निकलते ही बारह बरस का लड़का बन गया। उस लड़के ने डरते हुए वीरवर्मा से पूछा- "आप कौन हैं ? कहाँ से आ रहे हैं ? यहाँ क्यों आए हैं?"

"मैं शान्तिपुर का रहने वाला हूँ। मैं अभी...." वीरवर्मा अपनी बात भी पूरी न

धनसुख दास



कर पाया था कि किसी ने उस बालू के टीले पर से गरज कर पूछा-"कौन शान्तिपुर का नाम ले रहा है ?" यह सुनते ही उस लड़के ने वीरवर्मा से कहा- भागिए, अब यहाँ एक क्षण भी ठहरना ठीक नहीं। भागिए, तुरन्त यहाँ से दूर हो जाएँ। चलते-चलते सारी बात बता दूँगा।" वीरवर्मा ने उस लड़के को भी घोड़े पर चढ़ा लिया और ऐंड़ लगा दी। थोड़ी दूर जाने पर लड़का कहने लगा- "अभी जो टीले पर चिल्लाया वह एक राक्षस है। उसका नाम है सिकतासुर । वह आस-पड़ोस के गाँवों से आदमियों को पकड़ लाता है और इस तालाब में डाल देता है। तालाब में कुछ ऐसा जादू है कि डूबते ही आदमी कछुआ बन जाता है। इस राक्षस को नींद बहुत प्यारी है। इसमें वह कुम्भकर्ण से भी बाजी मारने वाला है। एक महीने तक आदमियों को ला लाकर तालाब में डालता जाता है और उसके बाद छः महीने तक सुख से सोता रहता है। जब वह जागता है तो वह बड़ा भूखा रहता है। बस, तालाब से कछुओं को निकाल लेता है । फिर उन्हें आदमी बना कर मजे से खा जाता है।आज आपने संयोग से मुझे बचा लिया है। लेकिन याद रखिए ! राक्षस ने आपके गाँव का नाम सुन लिया है। वह ज़रूर आपके गाँव में आएगा और आप लोगों को चौपट किए बिना नहीं रहेगा।"

"अच्छा, देखा जाएगा ! लेकिन पहले यह तो बताओ कि तुम किस गाँव के रहने वाले हो ?" वीरवर्मा ने लड़के से पूछा।

"मैं आपके पड़ोस के ही गाँव का रहने वाला हूँ ।' लड़के ने जवाब दिया ।

तब वीरवर्मा ने उस लड़के को उसके गाँव पहुँचा दिया। फिर अपने गाँव जाकर

लोगों को सारा किस्सा सुनाया। वे अब और भी घबराने लगे।

कुछ दिन बाद सिकतासुर की नींद खुली और उठते ही वह तुरन्त शान्तिपुर की खोज में चल पड़ा। सच पूछो तो वह पहले ही कई बार शान्तिपुर जा चुका था। लेकिन उसे उसका नाम नहीं मालूम था। इसलिए उसने सोचा कि कोई नया गाँव हैं। थोड़ी दूर जाने पर उसे एक मोची एक फटा हुआ बोरा कन्धे पर लटकाए दिखाई दिया। उसे देखते ही राक्षस ने गरज कर पूछा- "शान्तिपुर किधर है ?"

राक्षस को देखते ही मोची ने सोचा- "हाँ, तो यही वह राक्षस है जो आदमियों को उठा ले जाता है। अगर मैं इसे अपने शहर की राह बता दूँ तो यह सब को उठा ले जाएगा।"

यह सोच कर उसने कन्धे पर से बोरा उतार कर नीचे रख दिया। उसमें बहुत से टूटे-फूटे जूते थे। उसने उन सब को बाहर निकाल कर राक्षस को दिखाया और कहा- "ऐ भलेमानुस ! मैं शान्तिपुर से ही आ रहा हूँ। देखो, उस गाँव से चलते



चलते इतने जूते टूट गए। अब तुम्हीं सोच लो कि शान्तिपुर कितनी दूर है ? हाँ, अगर तुम चाहो तो मैं लौटते वक्त तुम्हें अपने साथ शान्तिपुर ले जा सकता हूँ।"

अच्छा, मैं यहीं रहूँगा। तुम जल्दी से लौट आओ। मैं भी तुम्हारे साथ शान्तिपुर चलूँगा।" राक्षस ने कहा।

मोची ने तुरन्त शान्तिपुर जाकर अपने गाँव वालों से सारा हाल कह दिया। तब वीरवर्मा को एक उपाय सूझा। उसने तुरन्त अपने गाँव वालों को साथ ले जाकर शान्तिपुर आने की राह में एक जगह एक बड़ी गहरी

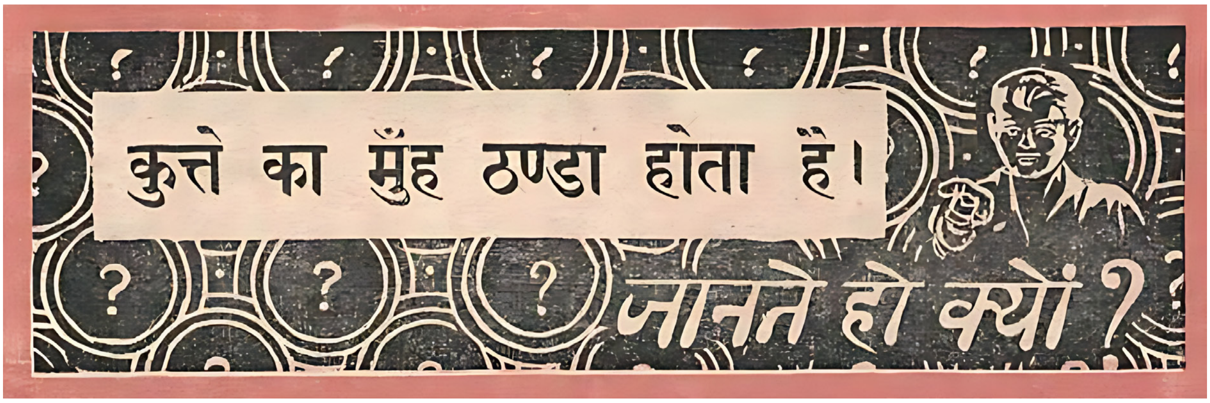
खाई खुदवाई। उसने उस खाई को पत्तों, टहनियों और घास-फूस से ढँकवा दिया जिसमे कोई न जान सके कि वहाँ खाई है। तब उसने मोची के कान में कुछ कह दिया और उसे राक्षस के पास भेज दिया। फिर वह सब गाँव वालों के साथ नजदीक की झाड़ियों में छिप गया।

थोड़ी ही देर में मोची ने राक्षस के पास लौट कर कहा-"चलो, मेरा काम हो गया। अब शान्तिपुर चलें।" तुरन्त राक्षस मोची के पीछे पीछे चलने लगा। मोची जब खूब जल्दी जल्दी चलने लगा तो राक्षस थोड़ा पिछड़ गया। मोची ने आगे आगे चल कर खाई को बग़ल से पार किया और राक्षस को पुकारा- "अजी! जरा क़दम बढ़ाओ! अगर इस तरह हम दस बरस तक चलेंगे तो भी कभी शान्तिपुर न पहुँच सकेंगे।"

यह सुन कर राक्षस दौड़ने लगा और धड़ाम की आवाज़ के साथ खाई में जा गिरा। तुरन्त वीरवर्मा और उसके गाँव वाले सभी झाड़ियों में से निकल आए। उन्होंने फुर्ती के साथ खाई को मिट्टी से पाट दिया। इस तरह राक्षस से पिण्ड छुड़ा कर वे सभी जादू के तालाब के पास गए। उन्होंने सभी कछुओं को पानी से निकाल लिया और उन्हें फिर आदमी बना लिया। तब सब लोग खुशी खुशी अपने गाँव लौट गए।

तब से गाँव वाले वीरवर्मा और उस मोची की चतुराई का खूब बखान करने लगे। उन्होंने उस गाँव का नाम भी बदल कर वीरनगर रख दिया।





कुते का मुँह हमेशा ठण्डा रहता है। जानते हो क्यों ? इसकी कहानी सुनाता हूँ; सुनो। बहुत दिन पहले किसी गाँव में एक किसान रहता था। वह बड़ा कञ्जूस और निर्दयी था। उसे पैसा खर्च करना बिलकुल पसन्द न था। एक एक धेले के लिए जान देना था।

उसके बच्चों ने एक कुत्ते को बड़े प्रेम से पाल रखा था। लेकिन यह उस किसान को बिलकुल भाता नहीं था।

पर किसान की स्त्री बहुत दयालु थी । वह किसान की तरह कञ्जूस भी न थी । वह उस कुत्ते को बहुत प्यार करती थी। एक बार उस गाँव में हैजा फैला। लोग कीड़ों की तरह मरने लगे। यह देख कर गाँव वाले डर गए। उन्होंने तय किया कि गाँव छोड़ कर जान बचाना ही बेहतर है। उस गाँव से बाहर कहीं भी जाने के लिए दो तीन दिन तक नाव में सफ़र करना पड़ता था । इसलिए हरेक गाँव वाले ने एक एक नाव किराए पर ले ली। दूसरे लोगों की तरह किसान भी अपने परिवार को साथ लेकर किराए की एक नाव पर चढ़ गया ।

किसान की स्त्री और बच्चों ने कुत्ते को भी साथ ले जाना चाहा। लेकिन किसान झुँझला उठा - "जगह कहाँ है इसमें? हमें ही दिक्कत हो रही है।" लेकिन यह सुनते ही बच्चों ने मुँह लटका लिया। कुत्ते को छोड़ कर जाने के लिए वे किसी तरह राज़ी न होते थे। उसकी स्त्री ने भी बहुत हठ किया। तब आख़िर उसे कुत्ते को भी अपने साथ लेना पड़ा।

जब रात हुई तो किसान के परिवार वाले सो गए। लेकिन वह कुत्ता जाग कर पहरा देता रहा। कुछ समय बीतने पर कुत्ते ने देखा कि नाव में पानी बढ़ रहा है। घबड़ा कर उसने चारों ओर घूम-फिर कर देखा ! एक छोटे से छेद से पानी आ रहा था।

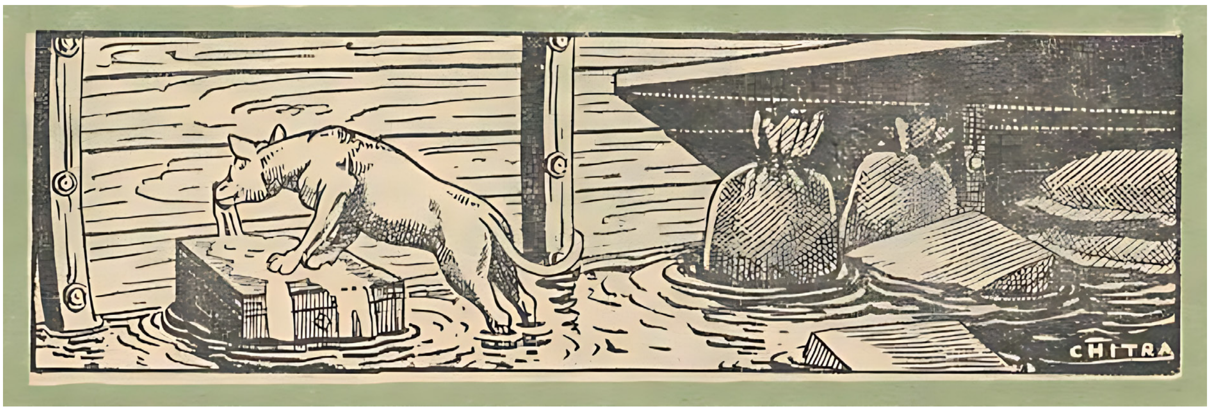
यह देख कर कुत्ते ने सोचा- "सब लोग निश्चिन्त सो रहे हैं। कोई नहीं जानता कि नाव में पानी आ रहा है। अगर मैं देखता रह जाऊँ तो थोड़ी ही देर में नाव डूब जाएगी ! अगर मैं भोंक कर शोर मचाऊँ तो इन सबकी नींद खराब हो जाएगी। हो सकता है कि ये लोग घबरा जाएँ और बच्चे रौना शुरू कर दें। इसलिए इन लोगों को जगाना ठीक नहीं। मैं अब क्या करूँ ? इतने लोगों की जान कैसे बचाऊँ ?"

यों सोचते सोचते कुत्ते को एक उपाय सूझ गया। तुरन्त उसने अपना मुँह उस छेद में लगा दिया। इस तरह करने से उसको तकलीफ तो हुई, लेकिन पानी आना बन्द हो गया। कुत्ते ने अपने मालिक की जान बचाने के लिए अपना मुँह रात भर उस छेद से सटाए रखा।

सबेरा होते ही किसान जगा और कुत्ते को नाव की तख्तियों से मुँह सटाए देख कर उसने सोचा-"जरूर कुछ खा रहा है ! वह लाठी लेकर उसे मारने गया। तब डर कर कुत्ता हटा और नाव में पानी आने लगा । नाव में पानी आते देख कर किसान चौंक उठा। अब उसे

कुत्ते की स्वामिभक्ति पर विश्वास हो गया । वह अपनी पिछली निर्दयता पर पछताया ।

जल्दी से नाव किनारे पहुँचाई गई। किसान के बाल-बच्चों ने जब सारी बातें सुनीं तो वे कुते को गोद में उठा कर नाचने लगे । वे पिता से कहने लगे-"देखा पिताजी ! अगर यह कुत्ता न होता तो हमारी क्या हालत होती ? आप तो इसे लाने ही नहीं देते थे ! कुत्ते की होशियारी और वफादारी से उसके मालिक और उसके बीबी-बच्चों की जान बच गई। उसने रात भर छेद में अपना मुँह लगा कर पानी रोक लिया था न ? इसलिए कहा जाता है, तभी से कुत्तों का मुँह ठण्डा हो गया।



CHANDAMAMA (Hindi) OCT. 1950 Regd. No. M. 5452



कमल और मुख-कमल